B.A. Part-I. Philosophy (H) paper-II

दर्शन और विज्ञान के बीच संबंध (Relationship between Philosophy and Science)

By - Dr. R.N. Sharma, J.M.S. College Munger

दर्शन और विज्ञान के बीच संबंध दिखलाने के लिए दोनों का अर्थ स्पष्ट करना आवश्यक होगा। दर्शन एक निरपेक्ष बौद्धिक प्रयास है जिसके द्वारा वह विश्व को उसकी सम्पूर्णता में समझने का प्रयत्न करता है। किसी वस्तु का अध्ययन अलग-अलग नहीं बल्कि एक इकाई में किया जाता है। इसी प्रकार विज्ञान ज्ञान के क्षेत्र में एक विशिष्ट वस्तु का अध्ययन करता है। अनुभव भाव से प्रयोगशाला में किसी वस्तु विशेष का अध्ययन किया जाता है। इसकी अपनी अलग वैज्ञानिक विधि है। यहाँ पर सामग्री इकट्ठा किया जाता है, उसका विश्लेषण किया जाता है और तब वर्गीकरण एवं सामान्यीकरण के आधार पर निष्कर्ष निकाला जाता है। अतः वैज्ञानिक निष्कर्ष सत्य होता है।

दर्शन और विज्ञान निम्नलिखित बातों में भिन्न दीखते हैं:—

1. Distinction in nature — दर्शन का स्वभाव ~~वर्णनात्मक~~ एवं सैद्धान्तिक है जबकि विज्ञान का स्वभाव प्रायोगिक है। यहाँ पर किसी वस्तु का अध्ययन प्रयोग द्वारा ही संभव है।

2. Distinction in porblem — वैज्ञानिक समस्याएं विशेष से संबंधित हैं जबकि दार्शनिक समस्याएं सामान्य से संबंधित हैं। वैज्ञानिक समस्याएं संकीर्ण एवं सीमित होती हैं, जबकि दार्शनिक समस्याएं वृहत् और विश्वव्यापी होते हैं।

3. Distinction in attitude — यद्यपि दर्शन और विज्ञान की प्रवृत्ति उदार के साथ ही साथ अनुभव एवं विवेक से प्रभावित है, फिर भी दार्शनिक प्रवृत्ति समीक्षात्मक, संदेहात्मक आश्चर्य एवं असंतोष से परिपूर्ण है।

4. Distinction in method — दर्शन की पद्धति बौद्धिक चिंतन है, जबकि वैज्ञानिक पद्धति प्रायोगिक है। इसके बावजूद दोनों आगमन, निगमन, विश्लेषण तथा संश्लेषण पद्धति का प्रयोग करते हैं।

5. Distinction in activity — बौद्धिक क्रिया, वैज्ञानिक पद्धति से संचालित होती है और वैज्ञानिक विधि का सहारा लेती है, जबकि दार्शनिक क्रिया दार्शनिक विधि एवं पद्धति से संचालित होती है।

6. Distinction in Conclusion — वैज्ञानिक किसी वस्तु के संबंध में निश्चित निष्कर्ष देने का प्रयास करते हैं, परन्तु दार्शनिक उसकी चिन्ता न कर उस वस्तु की समीक्षा के लिए छोड़ देते हैं। फिर वैज्ञानिक किसी निष्कर्ष के संबंध में एकमत हैं जबकि दार्शनिकों के बीच किसी निष्कर्ष के संबंध में काफी मतभेद है।

7. Distinction in effect — वैज्ञानिक पद्धति मनुष्य को वस्तुवादी या यथार्थवादी बनाता है। वैज्ञानिक सभ्यता हमेशा नयी-नयी चीजों को हमारे सामने प्रस्तुत कर रही है, जबकि दर्शन मानव को उद्देश्यपूर्ण बनाता है जो मनुष्य के विचार को प्रभावित करता है। दर्शन का संबंध सभ्यता से न होकर संस्कृति से है, जबकि विज्ञान का संबंध सभ्यता से है।

वास्तव में ~~इस~~ जितनी भिन्नता दर्शन और विज्ञान के बीच दर्शायी गयी है उतनी भिन्नता हम दोनों के बीच नहीं पाते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों के बीच संबंध पाया जाता है। इन दोनों के बीच संबंध दिखाते हुए V. Ferm (वी. फर्म) महोदय ने कहा है कि "The sciences are the children of the old mother philosophy. It is only recently, comparatively speaking, that the children have matured to a place of independence and set up their own separate households." कहने का अर्थ, यह है कि "सभी विज्ञान दर्शन के संतान हैं। आरम्भ में विज्ञान की स्वतंत्र सत्ता नहीं थी, बल्कि ये सभी दर्शन के अंग थे। यह बहुत ही हाल की घटना है कि जब अन्य विषयों में परिपक्वता आयी तो अन्य विषय दर्शन से अलग हो गये।" इसी तरह विज्ञान भी दर्शन से अलग हो गये।

परन्तु इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि दर्शन और विज्ञान दोनों के बीच विरोध है। दोनों के बीच किसी खास बात को लेकर मतभेद हो सकता है, परन्तु विरोध नहीं, क्योंकि विरोध की अवस्था में दोनों का समन्वय असंभव हो जायेगा। इसलिए हमलोग यही कह सकते हैं कि दर्शन और विज्ञान के बीच मतभेद है। इसके साथ ही साथ संबंध में दोनों के बीच है।

Scanned with CamScanner

दर्शन और विज्ञान के बीच उत्पत्ति, उद्देश्य एवं पद्धति एक ही है। दोनों की उत्पत्ति जिज्ञासा से हुई है। अपने विश्व की वस्तुओं को आश्चर्यमय देखकर उनके संबंध में ज्ञान प्राप्त करने के लिए दर्शन और विज्ञान की उत्पत्ति हुई है। दोनों का उद्देश्य मानव को ऊपर उठाना है तथा उनकी परिस्थितियों को स्पष्ट करना है। दोनों की पद्धति वैज्ञानिक है। बुद्धि द्वारा दोनों ही मानव की समस्याओं का समाधान करते हैं।

दर्शन और विज्ञान का यह संबंध पाश्चात्य एवं भारतीय दोनों दार्शनिकों द्वारा स्वीकार किया गया है। दोनों का मत है कि विज्ञान की अंतिम परिणति दार्शनिक चिन्तन में ही होती है। इसे उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। गुरुत्वाकर्षण शक्ति की व्याख्या विज्ञान सिर्फ यही कर पाता है कि एक वस्तु दूसरी वस्तु को 'किस प्रकार' आकर्षित करती है। परन्तु एक वस्तु दूसरी वस्तु को 'क्यों' आकर्षित करती है? इस 'क्यों' का उत्तर विज्ञान नहीं दे पाता है, वरन् दर्शन देता है। इस प्रकार 'किस प्रकार' और 'क्यों' दोनों ही प्रश्नों द्वारा गुरुत्वाकर्षण नियम की व्याख्या हो सकती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दर्शन और विज्ञान के बीच घनिष्ठ संबंध है। पाश्चात्य दर्शन में इस संबंध का समर्थन रसेल, एडिंगटन, व्हाइटहेड आदि द्वारा मिलता है तथा भारतीय दर्शन में Dr. B.N., Dr. Shil तथा Dr. P.C. Roy द्वारा मिला है। इस तरह स्पष्ट है कि दर्शन और विज्ञान एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि परस्पर पूरक हैं। दर्शन विज्ञान की मदद करता है और विज्ञान दर्शन की।

Scanned with CamScanner